

3102

THE  
LIBRARY

1003112/1301220

189115020

210



१२-३४/१७  
रुगवनेदवद्वेष्टलाकमसकाकुडा। यथाङ्गक्याधर्कं यीयताम्यमञ्जन॥  
रुदव पु नि स्तु क म्म सा रू॥

५३२ तौरव दुलिका पञ्च गोच्यमोद्योने

अन्य ३१०२



१६ नमः ४ श्रीमहादेवे नमः ॥  
 ४॥ नृथयकि जा विविलिखा क  
 दिनय रुम क न ॥ ६ थू क दू यः  
 उमान न्ना वा य ॥ ६ लु सि वा य भा  
 न दू थ ॥ नि श क म्मा या थ ॥ थं दि  
 लि द य क र सा ॥ थ छु लि वा थ ॥  
 य रु सा वा स क ल स वा थ ॥ वि श  
 क न म द य का व न क रु क या थ  
 ॥ ॥ स कि नि श क म्मा या थ ॥  
 नी म श दि स स उ य मान न सृ य  
 थ या थ ॥ श्री वा य ॥ वा य क ॥ उ  
 य मान य व रु उ न ॥ श्री वा यः  
 न न्या स या य ॥ उ ल वा य नृ यः  
 वा क य जा न्ना म य जा ॥ थ म रुः  
 व व रु य ॥ गृ द्वा ना मा द व न  
 द व व लि व द क ग ण या नि रु  
 क व लि ॥ ६ द्वा द्वा द्वा स व रु कः  
 श्र व म हा रु क श्र व म हा न च  
 य ॥ श्र व र ल क श्र व वि उ य श्र  
 व म हा न श्र व र न्ना य श्र व  
 म हा न्ना न श्र व य म रु क श्र  
 ४ व र्मा ग न्ध व य द वा य व लि

गृ द्वा २ सार्नि क व २ स्वा हा ॥ ६ द्वा  
 स द्वा स म न्ना उ द्वा क स्व स्व दि न्ना  
 श्र ल वा नि न्ना द्वा द्वा ३ रु द व लिः  
 गृ द्वा २ स्वा हा ॥ व न्ना न न्ना क य व  
 व य द वा ॥ जा य ॥ द्वा द्वा द्वा स्वा हा  
 ॥ का य ॥ वृ च्च न्ना द्वा य नि मा रु  
 व दि न्ना स व वि वा म स्ति का क रु  
 सा व द रु क द न्ना क व ना क व म्मा  
 ना था य वा ॥ सा सा न श्र व मा दि द  
 व वि रु उ सा का नि द ख य दानिः  
 श्वा न च न म यि न मा मि ण क र्ण व  
 ल्या च्च न य जा वि वि ॥ नृ म्मा न वः  
 लि वि स र्ज न ॥ द्वा व स न्ना क द्वा क  
 जा द्वा व न्ना म न्ना क द्वा ॥ ६  
 कि का रु न ना द व थ ॥ य रु सा ल  
 द्वा व न ॥ क हा य क ग वा ण व  
 ना ॥ य क वा स न श्र का था य य  
 च्च नि स वा य म ॥ ॥ ॥

|       |      |        |                  |
|-------|------|--------|------------------|
| कृष्ण | द वि | (गमय)  | व रि ॥ (गमय) लि  |
| द क   |      | लि     |                  |
| ध व   | सि उ | (गम)   | ग ॥ (गम) ॥ स्वाः |
|       | स्वा | कु     |                  |
| (गम)  | द द  | स्वा न | न ॥ द द ॥ (गम) ॥ |
| य     |      |        | ध व ॥ क सा द क ॥ |



जिऊर खला॥ न्यासयाय॥ ऊलः  
यागु न्ययागु पूजा॥ न्यासपूजा  
॥ अत्रिपूजा॥ डं डं डं मायकयः  
नमः॥ गमपूजा॥ डं गं गं गं  
वक्रननमः॥ ददपूजा॥ डं साः  
सांसां सांसायनमः॥ ध्रुवपूजा॥  
डं द्रां द्रां स॥ सांस्कत्रायनमः॥  
गमयर्त्तिगपूजा॥ डं हां हित्वा  
यनमः॥ खानपूजा॥ डं श्रीं श्रीं  
नमः॥ गमयपूजा॥ डं द्रां स॥ ऊ  
नादनायनमः॥ कसादकपूजा॥  
डं वां वां वृं वृं नायनमः॥ जिऊः  
प्रसन्नपूजा॥ डं द्रां वक्रां नमः  
॥ थवथवमन्त्रनजिऊप्रसन्नस  
क॥ गायत्रीमन्त्रनवात्र॥ स्वरुग  
थय॥ दक्षिणरुगनग्न्या॥ डरुः  
प्ररुगदवयार्त्ति॥ म॥ रुगनग्न्या  
वायार्त्ति॥ ऊयमानयार्त्ति॥ य॥ रुगन  
काय॥ नृमन्त्रनगायत्रीमन्त्र  
॥ रुगन॥ रुगन॥ रुगन॥ रुगन॥  
नविधि॥ ॥ रुगनवतलि॥

यागासननवकाथायाय॥ काथा  
यर्त्तिखालकयपूजायाय॥ पूजा  
दिन॥ न्यासादिऊल न्ययागु  
न्यासपूजा॥ डं गं गं गं गं  
वलिगृह॥ १॥ डं द्रां द्रां  
ग्न्या॥ २॥ डं द्रां द्रां द्रां नृमन्त्रक  
स्तानकयवालाय॥ ३॥ द्रां द्रां  
द्रां द्रां द्रां द्रां द्रां द्रां  
य॥ ४॥ नृमन्त्रक  
य॥ ५॥ सर्वरुगन॥ ६॥ सर्व  
विष्णु॥ ७॥ द्रां द्रां द्रां द्रां  
मन्त्र॥ द्रां द्रां द्रां द्रां द्रां द्रां  
गृह॥ १॥ नृमन्त्रक  
रुगनवायवलिगृह॥ २॥ द्रां द्रां  
यद्रायजाय॥ ३॥ द्रां द्रां द्रां द्रां  
यद्रिमन्त्रादि॥ वलिविष्णुर्त्तिना  
यद्रुसालाया॥ ४॥ द्रां द्रां द्रां द्रां  
य॥ ५॥ रुगननखरुसाधनी॥  
कसकृत्तिहाकाकायावृत्तिना  
खरुदयक॥ कृष्णय॥ ३॥ संध्या  
वदयक॥ पूजा॥ नृमन्त्रक  
नृमन्त्रकयत्रय॥ १॥ नृमन्त्रक



यामुनाखउ। अक्षरं पूज्य ॥ जाय  
॥ नमो नमः ॥ ॐ किं ह्यनख पुसा  
धनं ॥ खवलाका थ ह्यनख पुसा  
कावकय ॥ ककारु मिसा धनयाः  
या ॥ मुमिसयूजा ॥ ॐ वं वास्तुवि  
यकयवक्र ॥ ॐ नमः ॥ अत्रया  
नस्तनाद न्याया ॥ नमः मन्त्र नः  
कश्चिदकन नमः मन्त्र नः नः ॥  
नमः वाशादकन गायत्री नः ॥  
॥ यकवासन मन्त्र ॥ ३ याय ॥ दः  
थसगुरु कय ॥ पूजा ॥ ॐ सवादि  
द्विना ॥ यवक्र ॥ ॐ नमः ॥ दक्षि  
ॐ सविदि पूजा ॥ ॐ ॐ निकात्र  
ममूरु यनमः ॥ ॐ रुद्रस गाथ  
पूजा ॥ ॐ यदिकायलक्ष्मी मूरुः  
यनमः ॥ विदि नमः पूजा ॥ लाः  
जापूजा ॥ ॐ सो दोलक्ष्मी मूरु यन  
मः ॥ गुरु पूजा ॥ ॐ द्वावक्र ॥ ॐ न  
मः ॥ यरुसात्रास दाल नमः मन्त्र  
नविदि गाय ऊरुसात्रास दालः  
ॐ अत्रक उयल नमः मन्त्र नः ॥ ॐ

खलु नकाज्ञका विष्णु या क  
मासरुसा गुलका नमः क कः  
नमः नयल वाव ऊरुसा ला सका  
या ॥ ॥ नमः मन्त्र यक गवानः  
काय ऊरुसा ला सकाया ॥ ॥  
खवन गामयलि गजान नमः म  
न्त्र ॥ गुरु नयय नमः ॥ यानु ऊ  
रुका यगुकारु विसलि गाथरु  
टाविदि कता नमः नमः गुरु निः  
वाहया ॥ गुरु निवर्ण कियारुः  
वर्ण कः ॥ ॐ किं मिसा धनं ॥ ॥  
ककारु निवर्ण कियूजा ॥ न्यासादि ॥  
नाला पूजा ॥ चलसिंहासनायः  
नमः ॥ चलद वास्तुयन मः ॥ न  
मः ॥ ॐ किय यनमः ॥ ॐ अक्षरं  
निवर्ण वाथ नमः ॥ ॐ नमः ॥  
यद दया यनमः ॥ ॐ नमः ॥  
यनिवर्ण स्वाहा ॥ ॐ ॐ नमः ॥  
निखाय वोवट ॥ ॐ ॐ नमः ॥  
कववायद ॥ ॐ ॐ नमः ॥  
ययायव वट ॥ ॐ ॐ नमः ॥







नाद्यवलिपूजाप्रकाशमधुप  
स्यवा॥प्रकिया॥ॐ नमः केयूर  
कवप्रकनियं सवप्रिदहविनि  
यादिकर्यं॥दात्रादिदवस्तिन  
नदसर्वप्रदीकनक्षत्रैषस्व  
दियग॥ॐ कियवद्वत्रावनः  
विप्रि॥कहाविवकिरुमनी॥  
यजमानानकि कलसयजः  
माननविवकसजानक॥आर  
यननक्षत्राय लखनकायका  
यकवाक३॥हाहालाकयाल  
हायूरुसंप्रकनाथायाविद्याः  
नाथं सनायत्रयूरं सवाकना  
मके सनिविषविवारुयाः॥  
गुरुनासनकसीविवकि  
क॥ ॥कलसकनकावकय  
॥लखमाय॥कहाविवकिः  
थित्रासनयूजायाय॥न्यासादि  
॥आलयूजा॥नाथाप्रकिया  
दिर॥वृथास्नायनम॥सिंहाः  
सनायनम॥धर्मादिर॥धर्मा

यनम॥ह्ला नायनम॥वेजाह्ला  
यनम॥नेष्ट्रायनम॥नूधर्मा  
यनम॥नूह्ला नायनम॥नूवि  
वाह्ला यनम॥नूनसूयायनम  
॥आन॥ॐ दं साकसाकावत्र  
धवासाकववरुसंस्तिनीडमः  
यासकिहादवविवकिकेके  
यक॥आनयूरं नम॥शियाऊ  
लि॥३॥नूधवात्रावका॥कैले  
॥वर्गग॥वलि॥नावाक॥धन  
जानिमद्रादर्थयक॥जावा॥कैले  
स्वाहा॥१॥संस्वाहा॥१॥स्वाहा॥  
ॐ ह्रीं नमः ॥१॥ ॥नादि॥नू  
गन्धादि॥प्रकिया॥ ॥लाहा  
कककदियावकात्रासन  
कलननचदधियावह्लानख  
प्रकाय॥यूरुस्यायप्रकित्वदि  
मूक्तिप्रवाकवाचला॥नमः  
ननिषण॥कडूहाधस्वमायूरं  
॥ ॥रुगलिं गमद्राकन॥  
डमायूरुगयूरि॥लिङ्गयूर



धनत्रायदासंकत्रायनमस्तुस्त्रीस  
वनिग्रहकात्रकः॥ ॥यार्थना  
॥यदिदं किय कय न्ना रु गवना  
खमनिर्ग्री।त्रकधीयंउ ग न्नाथ  
सर्वाधत्रवत्रवया॥नृगनन्धः  
दि॥००किंजितवधकिंकलणय  
जा॥१नृथयरूकधुयाथायसः  
वादावसकलद नमस्कात्रया  
दावा॥यरूसिंहासनसयानव  
न॥यउमानययारुऊनयात्र  
क॥सूयाय॥युननमस्कात्र  
न्यासादि॥उलवागयूजा॥नृध  
वागसगय, लीमदद, कर्णगुत्र  
का, शक, क, कामल, नका, ध  
क॥नृधवागयूजा॥नृलमयूः  
जा॥ठागुसायाकसवलितिय  
॥००सकाग्रकासुथानागानृ  
स्यत्रागधकिंनना॥दि॥नः  
यत्रिकियुकिंशुसाशुसुवित्रा  
त्रिका॥कस्यावलियूजागृक  
नुस्वाहा॥१॥नागधदवक

न्याध्रमा रु कायागिनाकल॥  
वदिम।धयकिंकिंयुकिंकिं  
लिदानव॥कस्यावलियूकनु  
स्वाहा॥२॥००कययालकथाः  
नृधरूकयमायि॥वका॥या  
यादात्रीयकिंकिंवलितिन  
मुक्तिदकी॥कस्यावलियूकः  
नुस्वाहा॥३॥वलितिसऊर्ण  
॥ ॥रुत्रवाग्निः  
यामन, नृगिकधुसस्कात्रया  
यविधि।र्थ॥वदिवकायनाक  
थायनका॥नृथकलणवृनया  
या॥००न्यादि लोकयालकलणः  
यूजा॥युननमस्कात्नी॥न्यासा  
लनृसायरुद॥कलीगन्यास  
॥द्वयन्यासा॥उलवाग, नृध  
वागयूजा॥नृलमयूजा॥विदव  
॥नृत्रावतासायनम॥ध्यान॥  
नृत्रावतगउनृद, रुमवर्धकि  
त्रादि॥धर्कसकसनयनैवक  
याधिंविहावयक॥००लौलौलौ



ॐ कारासंज्ञननायचक्रलसा

ममदमालासुयसुकी। वृष्णान



दिगर्मास्त्राय शुभमर्हि के ॐ  
यक ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं शुभमर्हि  
नमः ॥ वन्दन ऊहाय विनय  
यय दापवलि नेवाश ॥ जाय ॥  
ह्रीं स्वाहा ॥ ॐ मुनि ॥ दवाना के  
सर्वे श्रीं श्रीं श्रीं नानादयः ॥  
॥ शुभमर्हि नमः ॥ सुसर्वे ॥ सु  
विष्णु ॥ वद ॥ ॐ कि शुभक लक्ष  
पूजा विधि ॥ ॥ नृथ श्रीनिनाक  
लक्षपूजा ॥ न्यास ॥ विदव ॥ ॐ  
ना ॥ ॐ नृथ श्रीमहाशयि सर्व  
लक्ष श्रीं यना नेमय दक्षिण  
स्नानश्रीमर्हि के ॐ यक ॥  
ॐ यों यों यों श्रीनि स्नानमः ॥ व  
न्दन ऊहाय विनय यय दा  
पवलि नेवाश ॥ जाय ॥ यों स्वा  
हा ॥ ॐ मुनि ॥ ॐ स्वाहा याना  
दवि कर्हि काया लक्ष्मना ॥ वि  
ष्णुमर्दक विदवा श्रीनिमनिन  
मा मुनि ॥ ॐ कि श्रीनि कलक्ष  
जा ॥ ॥ नृथ श्रीनि कलक्षपूजा ॥

न्यास ॥ विदव ॥ ॐ न ॥ वदवाः  
विष्णु कर्म श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं  
वना दधुं शुभमर्दक विष्णु  
के कया लनि ॥ ॐ द्वां द्वां द्वां द्वां  
श्रीं लायनमः ॥ वन्दन ऊहाय  
विनय यय दाय ॥ वलि नेवाश ॥  
जाय ॥ द्वां स्वाहा ॥ ॐ मुनि ॥ नः  
वासन समास्त्राय वाय दक्षि  
॥ ॐ स्त्रि ॥ ॐ सर्वे श्रीं समास्त्राय  
दक्षिणाले नमा मुनि ॥ ॐ कि दक्ष  
कलक्षपूजा ॥ ॥ ॐ लक्षपू  
जा ॥ गद्य किमलन ॥ मलान  
वक्षपूजा ॥ वदकमलन ॥ कः  
क्षत्रपूजा ॥ ॐ श्रीं सपूजा ॥ ॥  
नृथ श्रीनि कलक्षपूजा ॥ न्या  
स ॥ नृवाहनादि विदव ॥ ॐ  
न ॥ यय वासन यय कर्म यय ग  
रुसमद कि ॥ सकाष्ट नृथ मान  
रा दिशु ॐ ॥ ॐ सदा वदी ॥ ॐ  
द्वां द्वां द्वां स ॥ नृदिशाय ॐ ॐ  
नृथ श्रीनि यय विदव वायन







स्मिन्निस्त्रययष्टुल्लयानि नः  
 मास्तुते॥ वाक्॥ नृपगं॥ ॥  
 ॐ किमर्थं जयकलषावनी॥ ॥  
 उवादि कलषयूजा॥ ॐ हं हं  
 यादि कलषमूर्कयनमः॥ ॥  
 नागद्ययूजा॥ ॐ न न नायनमः  
 ॥ वास्तुकि॥ क क क॥ क क क  
 ॥ म म म॥ म म म॥ म म म॥  
 कलिक॥ ॐ कि नागद्ययूजा॥  
 ॥ ऊ ऊ ऊ ऊ नेयूजा॥ ॐ हं हं ऊ ऊ  
 द्यायनमः॥ ॐ हं हं ऊ ऊ न न  
 मः॥ ॐ किय ऊ ऊ न न यूजा॥  
 ॥ लक्ष्मीयूजा॥ ॐ हं हं लक्ष्मीयन  
 मः॥ ॐ हं हं लक्ष्मीनमः॥ र न  
 नादिवलि॥ ॐ किलक्ष्मीयूजा॥  
 ॥ म म यलि गयूजा॥ ॐ म म मः  
 कायनमः॥ वा म देव॥ नृधात्र॥  
 कल्यत्र॥ ॐ लक्ष्मीन॥ ॐ कि म  
 मयलि गयूजा॥ क क क क क  
 यूजा॥ गु न न स्ताल॥ न्यास॥ क  
 ॥ म म म म म॥ क क क क क॥

द्रौ नरु दाय नमः॥ द्रौ नरु न्या  
 य स्वाहा॥ द्रौ म (अ) मा य वी घट॥  
 द्रौ न ना मि का य द्रौ॥ द्रौ क नि धि  
 का य व घट॥ द्रौ न मा य रु द॥  
 ॐ कि क रं न्या स॥ न थ व र्क न्या  
 स॥ द्रौ ॐ न्या ना य रु द व का य  
 नमः॥ स्वादि॥ न थ न रु द न्या स॥  
 द्रौ रु द या य नमः॥ स्वादि॥ ॥  
 ऊ ल या व न रु द या य यू जा॥ रु द  
 धु दि॥ न्ना त्म यू जा॥ शि द व॥ धः  
 मा य नमः॥ रू ना य नमः॥ वे रा  
 रू ना य नमः॥ ने श्व र्या य नमः॥ न  
 र्मा य नमः॥ न्ना ना य नमः॥  
 न्ने रा रू ना य नमः॥ न्ने श्व र्या य  
 नमः॥ न्ना त्म रू ना य स्वादि॥  
 डं द्रौ र न्द्र म धु ला य नमः॥ डं  
 द्रौ सूर्य म धु ला य नमः॥ डं द्रौ  
 न्द्रि म धु ला य नमः॥ न्ना नाः  
 मा हा य रु स मा न्द्र न्द्र क रु द्धुः  
 स रु क र्मा न्द्र का र्मा शि ला व न रु  
 व र्वा न्द्र वि न्द्रा न्द्रा॥ पि न्द्राः



कुलसंकर्षं महाकायमहाद्वयं  
 । वाचयत मायया धर्माणां गजस्रमा  
 यप्रियकै॥ नत्नसया धर्मे कान्तं  
 नोयत्रोदिविदुषिर्गं । खड्गकृतं  
 कयाणानिविन्दस्वत्वाद्भक्तसुके  
 ॥ विशृङ्खलाटिमहाकर्मकतन्त्र  
 हाशुशुषिर्गं । वक्राविष्णुसूत्रद्व  
 नाभिप्रसादपृष्टयादकां॥ स्वाभि  
 वाणवर्तुलाग्रेण । धर्मकैलया  
 कुलं । शुभप्रभयि सातानां किं  
 किलावत्रसंकुलं॥ स्मसानवम  
 हाशोदयागिनीगणमश्रुर्गं ।  
 नृयमानमहाद्वयं लाकावर्तः  
 ककात्रकै॥ नमामिध्रीमहाकालं  
 रुचर्वंशुवनभृशं । यद्यप्यप्यु  
 ध्यादायिष्येयमविनासने  
 ॥ सर्वसिद्धिमवाप्नातिसदाविः  
 ऊयवद्वर्गं॥ ॐ किं ध्यानपूर्व्यं न  
 मः॥ श्रियोऊं लि३॥ नैऋतं  
 श्रुं गिरवास्तुतु नमः कुरु  
 प्रवायनमवायादकां॥ द्वाकः



वरुप्रवायनमः॥ॐ ह्रीं नुका  
गोवरुप्रवायनमः॥ॐ ह्रीं शि  
नरुप्रवायनमः॥ॐ ह्रीं कि  
प्रवायकं ॥ शिर्यांरुलि ॥ रु दः  
यादि ॥ ज्ञातासु मदा ॥ धूपदा  
या ॥ जाय ॥ ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ मु कि  
गुह ॥ नै संशु रुरु ककयः  
कानैशादि ॥ ॐ ह्रीं सु न्दिलः  
पूजा ॥ ॥ नका कथुसमि  
यंगवा ॥ ॥ क सुवा ॥ धनै ॥  
धवक वरुवा ॥ धनै ॥ वरु  
स्वाली ॥ धनै ॥ न सु धाद  
धी ॥ न सु नयान ॥ मूलननि  
प्रादधी ॥ न सु न न सु दनी ॥  
धनै नागन ॥ कवय न न वरु  
० नै ॥ रु दयन जा क वरु स्वाः  
लिसरु ॥ धलदद दा न मूल  
मनु न न मि स च य ॥ मूलम  
नु न रु दयन क वरु न वरु  
धु पूजा ॥ ॥ वरुवान धु क वरु यग  
यगीमनु न ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

ह्रीं स्वाहा वावट ॥ धनयुक्त  
यमनु ॥ वरु सिद्धा न ॥ न सु ध  
सं वरु क वरु न न वरु ० नै ॥ व  
धु न वरु नै ॥ धनमदा ॥ ॐ  
कि वरु सा धनै ॥ धलकानकः  
विमिथी ॥ यं वरु वरु म न सु  
ध न यगीनै ॥ वासक का वरु नाः  
दु कि ॥ धु ना दु कि पू धु ॥ ह्रीं मः  
या वरु धन विमिथी ॥ ह्रीं लाः  
दु कि विय ॥ पूजा या दा क धनैः  
धवधवमनु न न द्रु कि ॥ धव  
सि लाकन वरु य ॥ कल ध य कि  
ध वरु वरु वरु य ॥ संख्या दु कि मू  
लन ॥ ला क सा धना खा दान वि  
यमला क सा लिध विय ॥ ॥  
नका स्नान मधु यं ग वरु ॥ यरु  
या ॥ ॥ धन सु द व स्नान या य ॥  
य वरु वरु वरु य ॥ द व या ना न  
ध वरु न रु र्म ग ॥ धया द व नः  
क वरु क य ॥ धया द व न रु द य  
० क य ॥ ॥ र्म ख सु कि क वरु कि जा



य॥ मालका वाय॥ स्नान मधुय  
पूजा॥ गुन नमस्का ल॥ न्यासा॥  
उलपाय नृध्याय पूजा॥ न्यासा  
पूजा॥ सर्वतमुपयं गवानला  
य॥ गायत्री॥ नृध्याय नृध्याय  
नलाय॥ वसु संस्कार॥ स्नानः  
कलषपूजा॥ पूर्व॥ द्वादश मृ  
त्तिका रुद्रयन पूजा॥ यत्के कः  
खाय जित्वा पूजा॥ ॥ नृधि  
ना स्नान कलषपूजा॥ डं द्राः  
द्रात्र समुद्राय नमः॥ डं द्रा नृ  
नकना गायन मः॥ पूर्वत कन  
पूजा॥ ॥ दक्षिण॥ यत्त वल्ल  
व जित्वा पूजा॥ यत्के मृत्त  
यज्ञान॥ ॥ नमस्तु कलष॥ डं  
द्रा दक्षिण समुद्राय नमः॥ डं द्रा  
नृध्याय नमः॥ दक्षिण  
वकुन पूजा॥ ॥ यत्त म॥ य  
द्रा दय कवचन॥ यत्के गवा ग  
यज्ञान॥ ॥ वायव्य कलष॥

डं द्रा सुत्रा समुद्राय नमः॥ डं द्रा  
यद्रा ना गाय नमः॥ यत्त मवः  
कन पूजा॥ ॥ डं द्रा॥ दक्षिणः  
डावधीन नृध्याय॥ यत्के काय मूल  
न॥ रुद्रा गाय दक्षिण दक्षिण  
वो द्वादश मूलन॥ यत्त मृत्त  
मृत्त॥ ॥ वीणा न कलष॥ डं  
द्रा वृद्ध समुद्राय नमः॥ डं द्रा  
जित्वा लना गाय नमः॥ डं द्रा  
वकुन पूजा॥ ॥ मूल द्वादश  
सद्वत्त विधि॥ यत्त माला वस्त्रा  
नमः॥ यत्त मृत्त॥ यत्त मृत्त  
निर्मल नयाय॥ वलि॥ मरुत  
॥ माला सुजान लाया॥ साक  
या॥ ॥ कका दस्नान॥ नृध्यादि  
यत्त मृत्त॥ पूजा या द्वादश धर्मः  
वधव मकुन स्नान याय॥ मूल  
न सुरु सखात्र॥ यत्त मृत्त किः  
ल स्नान काया लक्ष्म्या वयया  
॥ दक्षिण विधिका व॥ स या कलष



पूजा॥ मूल लक्षणानां किं विधायि॥ वि  
कल लयाह सुपूजा॥ विश्वकः  
सामूल लक्षणपूजा॥ वन्दनादि॥ सदैव  
॥ नमः॥ कि॥ प्रणि॥ या॥ या॥ या॥ या॥  
वमधुपयाने मय द्वात्रसमिसा  
थं कालिनर्त्त सायावदकाय॥  
नमिकृष्णपूत्र सरुदयी० सद  
वमयमूलना॥ कायालनपूयः  
कवचन॥ यैवसुका नदियक  
वचन॥ मूलनन्यासादिनिद्राक  
लणपूजा॥ सिंहासनवादावः  
निद्राकलणयार्त्तानादकिमूलः  
न॥ ॥ कलादव॥ धर्मी॥ द्रोत्रा  
नमत्वाय स्वाहा॥ डेंद्रोत्रा नम  
त्वायिष्यवक्रन स्वाहा॥ नाना  
किंवाय॥ डेंद्रोत्रिशा नमत्वाय स्वा  
हा॥ डेंद्रोत्रिशा नमत्वायिष्यवक्र य  
विष्णुव स्वाहा॥ डेंद्रुं विवकत्वा  
य स्वाहा॥ डेंद्रुं विवकत्वायिष्य  
वक्र य स्वाहा॥ ॐ किरु कत्वयथाद

वस्यमूलमन्त्रनमयशीनयैवः  
कवचनसाधन॥ ॥ कलादवद  
लकिया॥ ॥ यानिकल्पना॥  
दुदयननादकिं वीर्यपदाना॥ ग  
यशीननादकिं॥ वक्राकवचन  
नादकिं॥ गरुडानदुदयनना  
दकिं॥ यैवमवन विवननादकिं  
॥ धीमका नयन विखाननाद  
किं॥ जाककर्म कवचननादकिं  
॥ ज्ञायसिं धलवां दक्षुय॥ वसु  
दत्त॥ मिखा कानक नममन्त्रन  
नादकिं॥ यैवमधुपूय॥ मूल  
ननादकिं॥ नाशिकुदन मूलन  
नादकिं॥ वहीया गत्र लनन  
नादकिं॥ विद्यालक्ष्मय मनावा  
क॥ सया कलसनकाय गायशी  
न॥ डक्कान॥ मूलननादकिं॥  
सुक्तकवनक गायशीननादकिं  
॥ निकमन नमननादकिं॥ ध  
लक्ष्मय नामकवचन मन्त्रनना



दुकि॥ धलसदवयाना मयाया  
वयासनयाचक॥ नासिचक मृ  
लमनुन॥ ॥ रुलयासनन  
सुननादुकि॥ सपिकिनकनन  
यासनन सुननादुकि॥ वनक  
नाचमनमूलमनुन॥

यूगकत्रयकवचननादुकिः  
लुंडाहाखालककुं रुद निख  
ननादुकि॥ लुंडाहामूलवाक  
रुनिनिकय॥ ॥ वनवंध  
न निवननादु कि॥ कसाविय  
॥ गायत्री न जानाविय॥ गायः  
शविय वरुभावनमूलननाः  
दुकि॥ ॥ दीक्षाप्रदानमूलः  
न धननादुकि॥ विवाहा॥ रु  
दयननादुकि॥ शकसुश्रुयदा  
न कवचन॥ काटरु निनकुय  
नित्रमनुन॥ ननिनालाय नि  
खानमनुन॥ आलहासानग  
लरुदयमनुन॥ लुंडाहा वि

य॥ कवंधवनचुसक॥ गृहायः  
कत्रयकिय॥ ॥ वधुथी॥ रुदय  
ननादुकि॥ ॥ वृंतिदणकिया  
॥ ॥ यथादवस्यमूलनकाः  
मकु॥ रुकादवसमीपमत्वा  
कवंधनसंकात्रयककुं निन॥ ॥  
नाक्षत्र॥ डं लं यथिवीकवायन  
म॥ लं ग॥ डं वं नाफवायनम  
॥ डं वं नाफवाधियकयविष्णुः  
वनम॥ नाही॥ डं वं रुकु कवाः  
यनम॥ डं वं रुकु कवाधियक  
यत्रदायनम॥ रुदि॥ डं यं वा  
य कवायनम॥ डं यं वायकः  
वाधियकय वृंतिदणवायनम॥  
ललाट॥ डं रुं नाकाण कवायः  
नम॥ डं रुं नाकाण कवाधिय  
कयसदाविवायनम॥ रुकासि  
कव॥ मृद्धि॥ डं रुं गितकवाय  
नम॥ डं रुं गितकवाधियकय  
सदाविवायनम॥ रुदि॥ डं रुं







नै॥ न्यास॥ ऊलपाय नवपायः  
पूजा॥ रुद्रमुद्रि॥ नानापूजा॥ नाना  
वाहन॥ उं क्रो संवत्तमहो रववा  
यना गुरु २०० रुमधु लनम ४ स्त  
ला॥ यववलि॥ शिदव॥ वाम॥  
उं क्रो दहव (धु) श्रवाय नमः  
॥ दह॥ उं क्रो क्रो हिरि २ दह  
श्रवाय नमः॥ थक गधपूजा॥  
नानाप्रणकयादि॥ यनासन  
॥ श्री नै॥ यके वकमहानकं  
शिवके नयना कली दधवाः  
दूमहानकं नानासम्यममः  
श्रुति॥ नानारुद्रसंयुक्तं  
प्रनृपप्रमश्रुति॥ उटायुटव  
रीदिवीचन्द्राद्वकृता (धम) री॥  
दं द्वाक गाल गीदं वकिं सिद्धः  
द्वायकृद्वर्षी॥ नीलाचलनिः  
रुस्यामं नीलीं जनसमयरी॥  
मनिसयकृताकार्यी॥ यिं गकष  
सहस्रवर्षी॥ शिशूलकरुणीय  
ईना गत्राजादसृयकादकि

नानवत्रानाह वित्राउयायः  
धनिम॥ कया लउमत्र ४ धकि  
४ या धादु गवलयिया वामन  
नाय धादिव्यादीवामानास  
रुना॥ सयत्राउकरी स्की (ध) व  
नमालन गूलिनी किं (०) वशि  
कलानं वक (धु) धाधसमधि  
नीमहायद्यासनासीनं कटि  
मखत्रमश्रुति॥ द्वादशीटिक  
साहाय्यं प्रत्नमालाविरुधिनी  
यादोनृपप्रसंयुक्तं मकमाः  
लावर्तकनी॥ नननासनमा  
सीनं कफलाटकसीनिरी॥ स  
फकाटिसुमना नी नननाः  
सनसं स्मिनी॥ गत्राहिसनिः  
रुदिवी संधी कमिव (ध) रीनी  
नवधामलादवीश्वरुच  
यक्रमधुन॥ ०० कि श्री नै॥ वः  
कुमनुनपूजा॥ रुद्रयादिन  
पूजा॥ श्रीं उलि॥ नैं उं क्रो क्रो क्रो  
शिखासंवत्तमहोरुनवाय











सु॥ गनिका ० यत्तास ॥ ५ ॥ धन  
पूर्वसा ॥ ॥ दक्षिणा ॥ यत्तेयन  
वा ॥ नस्तुक्त तटस्तुक्त वेयव  
दमिदं यत्तुक्त मय ॥ ५ ॥ ध  
नदक्षिणासा ॥ ॥ यत्तुम ॥  
यत्तु ॥ गायनद्वय कृष्णस्त्रिः  
नसर्वयधीयत्तु नकचंदन  
रुत्तककमस्तुक्त यत्तु यत्तु  
यत्तु यत्तु गवा ॥ दमि ॥ गमय ॥  
दमि ॥ गमय ॥ यत्तु ॥ धनयत्तु  
मसा ॥ ॥ डरु ॥ दक्षिणा ॥  
धी ॥ मिथ ॥ उक्तमासु वला कृत्  
याथ ॥ कंकम ॥ रुत्तलि ॥ मिक्त  
मि ॥ ५ ॥ रायस्तानकसुत्रय  
वनदीउत्त ॥ रुत्त ॥ ग ॥ ५ ॥ दक  
॥ रुत्त ॥ दक ॥ वी ॥ दक ॥ ५ ॥  
चुत्तु ॥ धन ॥ डरु ॥ मसा ॥ ॥  
१ ॥ कमाय ॥ गवसावन ॥ न्यासा ॥ सुत्त  
ननमलख ॥ ५ ॥ न्यासा ॥ का  
वत्तु ॥ विमिस्तुक्ता ॥ मय ॥ ननि  
कना ॥ नस्तुक्त ॥ यत्तु ॥ नस्तुक्त ॥

ना ॥ कवत्तु नस्तुक्त ॥ धनयत्तु  
सस्तुक्ता ॥ का ॥ यत्तु ॥ ५ ॥ नितः  
का ॥ यत्तु ॥ ५ ॥ २ ॥ सदा ॥ नितका ॥ यत्तु  
२ ॥ विद्याका ॥ यत्तु ॥ २ ॥ का ॥ यत्तु  
यत्तु ॥ यत्तु ॥ का ॥ यत्तु ॥ २ ॥ म ॥ ५ ॥ दि ॥ डरु  
नी ॥ ५ ॥ ५ ॥ मि ॥ का ॥ यत्तु ॥ ५ ॥ ५ ॥ सु  
कि ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥ म ॥ ५ ॥ २ ॥ सु ॥ सा ॥ न ॥ यत्तु  
गाय ॥ यत्तु ॥ ५ ॥ न ॥ का ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥  
दक्षिणा ॥ २ ॥ न ॥ म ॥ का ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥  
यत्तु ॥ २ ॥ न ॥ द ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥ ५ ॥  
५ ॥ ५ ॥ मि ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥ ५ ॥ ५ ॥ न ॥ यत्तु ॥  
५ ॥ ५ ॥ द ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ यत्तु  
मवकायवत्तु ॥ म ॥ ५ ॥ गमय ॥ यत्तु  
॥ यत्तु ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ मि ॥ म ॥ सा ॥  
५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ यत्तु  
वि ॥ म ॥ न ॥ म ॥ ५ ॥ यत्तु ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥  
५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥  
दक्षि ॥ न ॥ व ॥ का ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥ यत्तु ॥  
यत्तु ॥ ५ ॥ दक्षिणा ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ क  
वत्तु ॥ यत्तु ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ यत्तु ॥  
यत्तु ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥



डं डं डं डं ४ न न न न न २ ॥ डं डं ॥  
 डं ४ ड ड व का य स दा नि व द व ना य  
 द न्न य २ ॥ म न्न ॥ डं डं डं ४ ड ड ड  
 व का य २ ॥ ॐ न न न क सा द क सै य  
 न्न ॥ य न न म न्न म न्न न ॥ ख र्ण ॥ ॐ न  
 सै य न्न ॥ व ल्लि ॥ म ल्ल म न्न न ॥ श न्न  
 ॥ व व रू म स क र्ण ॥ नि ख न्न मि व नि  
 न्न मि दा वा मि मा ल ॥ न श पि  
 न्न क टा न्न गी रि न्न व न्न म रि च्छि  
 दि क काल म र्द्य ॥ द द्वा न्न न्न य ॥  
 रा रि य क कि न्न स रि र्ण ॥ नाल या  
 नाल म ली स मा च्छ क र्ण व क र्ण  
 द स रू य द न्न ॥ रु रु र्ण द द्वा न्न म  
 ॥ न न्न न नि स र्ण ॥ ध ल्लि थ व थ  
 व म न्न ॥ ॥ न म य ॥ न न्न न न्न  
 ॥ न न्न न्न न्न न्न ॥ ध र्ण द पि र्ण  
 न्न द पि ४ द द्वा सै र्ण ४ क सा द क न  
 मि र्ण ॥ न कि क र्ण ॥ य र्ण ग वा  
 रु र्ण र्ण का न्न य ॥ न्न य न्न म न्न  
 ॥ न म य ॥ म ल्ल म न्न ॥ ॥ न्न २ ॥  
 न क रू रु मि सी य य ॥ न क रू ग  
 द व स्ना न ॥ न क रू ग न्न न्न म न्न  
 य र्ण ॥ ध र्ण य न्न म न्न न य र्ण ग वा

वियम् ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥  
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥  
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥  
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

[illegible]

|                       |                       |                       |
|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| ॐ नमो भगवते वासुदेवाय | ॐ नमो भगवते वासुदेवाय | ॐ नमो भगवते वासुदेवाय |
|-----------------------|-----------------------|-----------------------|



कन्य गुरु उद्धं स्थान कथय ताम् वरुन उद्धं नृ  
 खदाङ्ग प्रसक्त मधु पिष्टूल कलस धनु नागा वञ्चो  
 को सतामान एषी दू निद्रादवाभाया  
 ताम् लिवाभाकि एम एव सुदि ल  
 गल्ह क षि यद्ग यद्गली  
 शक्ति दण्डि सातिका नागय  
 र्क के लु वै ह गोदिले च  
 दीप रेखा ले स्तान

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

निद्रादिव।श्या

शुद्धि ल  
॥  
शालग्राम

[illegible]

श्री

कमलवति

वका

दशवलि

不

श्रीगणेशाय नमः

यकेवन्ति

रुमि साधन  
पत्रे गाथा  
विष्णु कृत